Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
(A National Multidisciplinary bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 03, July-September, 2026, pp. 129-135

महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं में साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

आरती मालव[1]* एवं डॉ. दीपा स्वामी[2]

[1]गृह विज्ञान विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा।
[2]प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा।

*Corresponding Author: aartimalav89@gmail.com

***Citation**: मालव, आरती एवं स्वामी, दीपा (2026). महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं में साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता का अध्ययन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(03), 129–135.*

ABSTRACT

आज के समय में भारत में डिजिटलीकरण के तीव्र विस्तार के साथ साइबर अपराध एक गंभीर राष्ट्रीय चिंता के रूप में उभरकर सामने आए हैं। युवा वर्ग, विशेष रूप से महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राएं, इंटरनेट और सोशल मीडिया के बड़े उपभोक्ता होने के कारण साइबर अपराधियों के मुख्य निशाने पर रहते हैं। यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। कोटा जिले के विभिन्न महाविद्यालयों से समानुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से कुल 1,000 छात्र–छात्राएं (जिनमें 500 छात्र एवं 500 छात्राएँ सम्मिलित हैं) का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं। छात्र–छात्राओं मेंविशेषकर ग्रामीण पृष्ठभूमि और शहरी परिवेश के युवाओं मेंसाइबर सुरक्षा, डिजिटल गोपनीयता, ऑनलाइन वित्तीय सुरक्षा, कॉपीराइट संरक्षण, साइबर नैतिकता तथा सुरक्षित इंटरनेट व्यवहार के संबंध में अभी भी पर्याप्त जानकारी का अभाव है। प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्यराजस्थान राज्य के कोटा जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के बीच साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करनातथा इससे जुड़े विभिन्न कारकों का विश्लेषण करना है।

***शब्दकोश:** साइबर अपराध, डिजिटल साक्षरता, महाविद्याल छात्र–छात्राएं, कोटा जिला, साइबर सुरक्षा।*

प्रस्तावना

भारत विश्व के सबसे युवा देशो में से एक है और वर्त्तमान समय में तीव्र गति से हो रहे डिजिटल परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। युवा वर्ग (विशेष रूप से महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राएं) इंटरनेट और सोशल मीडिया के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं। तकनीकी साक्षरता के अभाव, ऑनलाइन प्रलोभनों और डिजिटल गोपनीयता के प्रति अज्ञानता के कारण युवा वर्ग साइबर अपराधियों का सबसे आसान और मुख्य निशाना बन रहा है। भारत के युवाओं को वर्तमान में निम्नलिखित प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है:

- **वित्तीय धोखाधड़ी और डेटा चोरी:** ऑनलाइन शॉपिंग, गेमिंग और डिजिटल पेमेंट के दौरान होने वाले फ्रॉड, तथा व्यक्तिगत डेटा की चोरी।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

- **सोशल मीडिया उत्पीड़न और फर्जी पहचानः** फेक प्रोफाइल बनाकर मानसिक प्रताड़ना देना, मॉर्फ्ड (Morph) तस्वीरों के जरिए उत्पीड़न, और सोशल मीडिया पर धमकियाँ या अपशब्दों का प्रयोग।
- **साइबर बुलिंग और मानहानिः** ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर हेट स्पीच (घृणास्पद भाषण), ट्रोलिंग और साइबर मानहानि के कारण युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला नकारात्मक प्रभाव।
- **अज्ञानता एवं कानूनी जोखिमः** पायरेसी, कॉपीराइट उल्लंघन, और अनजाने में अश्लील या आपत्तिजनक सामग्री साझा करने जैसे कृत्यों से जुड़े कानूनी परिणामों की जानकारी का अभाव, जिसके कारण युवा अनजाने में ही साइबर अपराधों में संलिप्त हो जाते हैं।

इन गंभीर समस्याओं को देखते हुए, यह आवश्यक हो जाता है कि विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं के बीच साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता का स्तर परखा जाए और उन्हें सुरक्षित डिजिटल आचरण के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

शोध विधि

यह अध्याय कोटा जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता के मूल्यांकन से संबंधित शोध की पूरी रूपरेखा प्रस्तुत करता हैः

- **शोध का प्रकारः** वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान।
- **अध्ययन क्षेत्रः** राजस्थान का कोटा जिला (ग्रामीण व शहरी महाविद्यालय)।
- **समग्र एवं न्यादर्शः** कुल 100,000 छात्र–छात्राओं के समग्र (Population) में से1,000 छात्र–छात्राओं (500 छात्र और 500 छात्राएँ) का न्यादर्श।
- **न्यादर्श चयन विधिः** समानुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधिद्य
- **तथ्य संकलनः** प्राथमिक स्रोत (प्रश्नावली/मापनी) और द्वितीयक स्रोत (शोध पत्र, पुस्तकें, आधिकारिक वेबसाइटें आदि)।
- **सांख्यिकीय तकनीकेंः** SPSS एवं MS Excel के माध्यम से वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, प्रतिशत, मानक विचलन) और अनुमानात्मक सांख्यिकी (t–परीक्षण, प्रसरण विश्लेषण)।
- **माप व विश्वसनीयताः** कोच्रन के नमूना आकार सूत्र और क्रोनबैक अल्फा (Cronbach's Alpha) का उपयोग।

उद्देश्य

महाविद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तथ्यों का संग्रहण एवं विश्लेषण

तालिका 1: स्थान

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
शहरी	578	57.8
ग्रामीण	422	42.2
कुल	1000	100

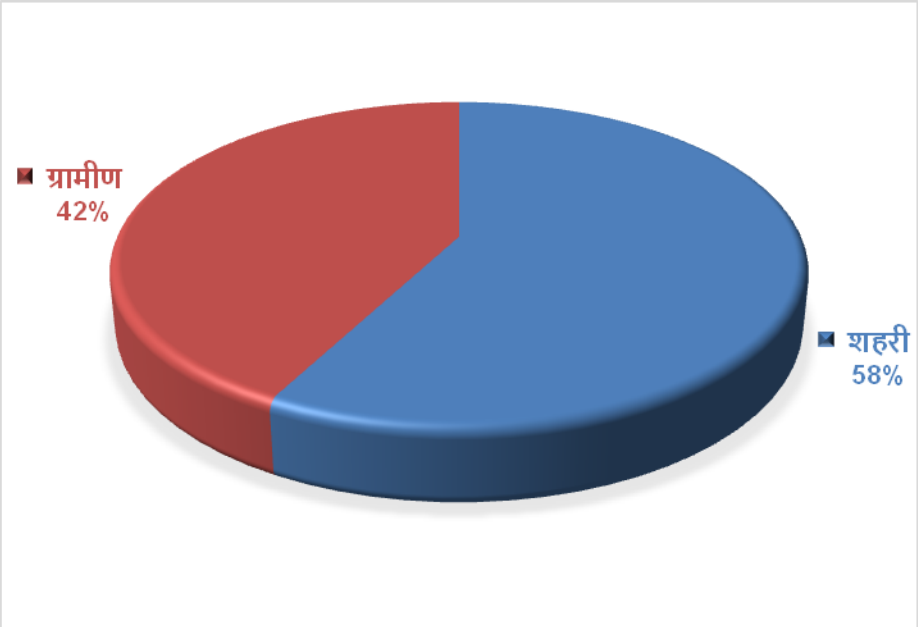

चित्र 1: स्थान

तालिका संख्या 1 से ज्ञात होता है कि कुल छात्र–छात्राओं में 42.2% छात्र दृछात्राएंग्रामीण क्षेत्र तथा 57.8% छात्र – छात्राएं शहरी क्षेत्र से संबंधित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 57.8% छात्र – छात्राएं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों से हैं।

तालिका संख्या 2: साइबर अपराध के सम्बन्ध में जागरूकताः ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत में)

प्रतिक्रिया	ग्रामीण	ग्रामीण	शहरी	शहरी
विद्यार्थीवर्ग	**हाँ**	**नहीं**	**हाँ**	**नहीं**
अनाधिकृत रूप से डिजिटल डेटा प्राप्त करने के प्रति जागरूकता	41.23	58.77	41.52	58.48
सोशल मीडिया या ई-मेल अकाउंट हैकिंग के प्रति जागरूकता	41.71	58.29	39.97	60.03
मोबाइल/कंप्यूटर हैकिंग के प्रति जागरूकता	41.71	58.29	42.56	57.44
डिजिटल उपकरणों में वायरस/मैलवेयर फैलाने के प्रति जागरूकता	41.47	58.53	44.64	55.36
सोशल मीडिया पर अपशब्दों के प्रयोग से संबंधित जागरूकता	41.94	58.06	38.24	61.76
सोशल मीडिया पर दी जाने वाली धमकियों के प्रति जागरूकता	38.86	61.14	48.1	51.9
ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की समझ	41.23	58.77	48.44	51.56
वेबसाइट के माध्यम से नकली माल बेचने के प्रति जागरूकता	41	59	41.18	58.82
अश्लील एवं आपत्तिजनक सामग्री साझा करने के प्रति जागरूकता	41.94	58.06	31.83	68.17
फिल्मों की पायरेसी के संबंध में जागरूकता	41.47	58.53	36.33	63.67
घृणास्पद भाषण और चरमपंथी सामग्री के प्रति जागरूकता	41	59	46.71	53.29
बाल यौन शोषण सामग्री (CSAM) के प्रति जागरूकता	44.31	55.69	50	50
कॉपीराइट उल्लंघन सामग्री के उपयोग के प्रति जागरूकता	49.05	50.95	47.92	52.08
पायरेटेड सॉफ्टवेयर और गेम के उपयोग के प्रति जागरूकता	38.39	61.61	38.58	61.42
साइबर मानहानि के प्रति जागरूकता	41.47	58.53	41	59
मॉर्फ्डतस्वीरों के माध्यम से उत्पीड़न के प्रति जागरूकता	44.79	55.21	42.73	57.27
ऑनलाइन गतिविधियों में फर्जी पहचान के प्रति जागरूकता	45.73	54.27	43.94	56.06

साइबर अरेस्ट (कानूनी गिरफ्तारी) की समझ	47.63	52.37	46.89	53.11
फोन से डेटा डिलीट करने की तकनीकी प्रक्रिया के प्रति जागरूकता	47.16	52.84	46.37	53.63
डिजिटल सुरक्षा हेतु हस्ताक्षरित बिल लेने के व्यवहार के प्रतिजागरूकता	41	59	39.1	60.9

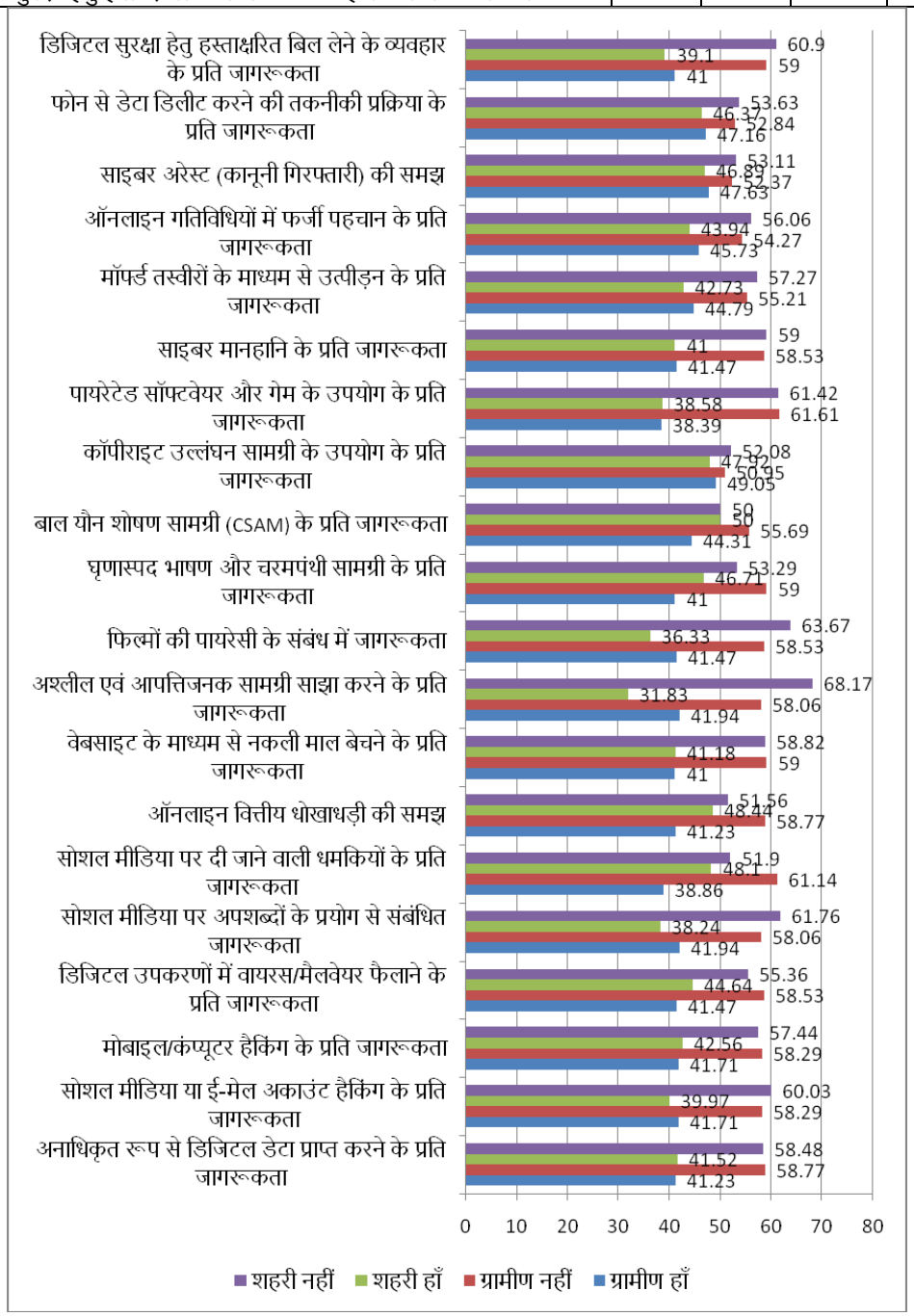

चित्र 2: साइबर अपराध के सम्बन्ध में जागरूकता: ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत में)

- तालिका स. 1 (प्रतिशत आंकड़ों) ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच साइबर अपराध के विभिन्न पहलुओं के आधार पर, साइबर अपराध के सभी 20 पहलुओं का विश्लेषण नीचे दिया गया हैः
- अनाधिकृत रूप से डिजिटल डेटा प्राप्त करने के प्रति जागरूकताः ग्रामीण क्षेत्रों में 41.23% हाँ और 58. 77% नहीं, जबकि शहरी क्षेत्रों में 41.52% हाँ और 58.48% नहीं दर्ज किया गया है। डेटा चोरी के प्रति दोनों क्षेत्रों के आंकड़े लगभग समान हैं।
- सोशल मीडिया या ई–मेल अकाउंट हैकिंग के प्रति जागरूकताःग्रामीण स्तर पर 41.71% हाँ व 58.29% नहीं, तथा शहरी स्तर पर 39.97% हाँ व 60.03% नहीं पाया गया, जो अकाउंट सुरक्षा को लेकर उदासीनता दर्शाता है।
- मोबाइल/कंप्यूटर हैकिंग के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 41.71% हाँ (58.29% नहीं) की तुलना में शहरी क्षेत्रों में 42.56% हाँ (57.44% नहीं) ने डिवाइस हैकिंग की बेहतर समझ को रेखांकित किया है।
- डिजिटल उपकरणों में वायरस/मैलवेयर फैलाने के प्रति जागरूकताःग्रामीण डेटा 41.47% (हाँ) बनाम 58.53% (नहीं) रहा, जबकि शहरी डेटा 44.64% (हाँ) बनाम 55.36% (नहीं) दर्ज किया गया।
- सोशल मीडिया पर अपशब्दों के प्रयोग से संबंधित जागरूकताः ग्रामीण क्षेत्रों में 41.94% हाँ और 58. 06% नहीं; शहरी क्षेत्रों में 38.24% हाँ और 61.76% नहीं दर्ज हुआ है।
- सोशल मीडिया पर दी जाने वाली धमकियों के प्रति जागरूकताः ग्रामीण इलाकों में केवल 38.86% हाँ (61.14% नहीं) रहा, जबकि शहरी इलाकों में यह बढ़कर 48.1% हाँ (51.9% नहीं) हो गया।
- ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की समझःग्रामीण क्षेत्रों में 41.23% हाँ (58.77% नहीं) की तुलना में शहरी क्षेत्रों में 48.44% हाँ (51.56% नहीं) ने वित्तीय घोटालों की अधिक समझ दिखाई है।
- वेबसाइट के माध्यम से नकली माल बेचने के प्रति जागरूकताःग्रामीण आंकड़े 41% हाँ (59% नहीं) और शहरी आंकड़े 41.18% हाँ (58.82% नहीं) रहे, जो ई–कॉमर्स धोखाधड़ी में एक जैसा रुख दर्शाते हैं।
- अश्लील एवं आपत्तिजनक सामग्री साझा करने के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 41.94% हाँ (58.06% नहीं) और शहरी क्षेत्रों में 31.83% हाँ (68.17% नहीं) दर्ज किया गया है।
- फिल्मों की पायरेसी के संबंध में जागरूकताः ग्रामीण प्रतिक्रिया 41.47% हाँ (58.53% नहीं) रही, जबकि शहरी क्षेत्रों में 36.33% हाँ (63.67% नहीं) दर्ज की गई।
- घृणास्पद भाषण और चरमपंथी सामग्री के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 41% हाँ (59% नहीं) तथा शहरी क्षेत्रों में 46.71% हाँ (53.29% नहीं) पाई गई है।
- बाल यौन शोषण सामग्री (CSAM) के प्रति जागरूकताःइस गंभीर विषय पर ग्रामीण क्षेत्रों में 44.31% हाँ (55.69% नहीं) और शहरी क्षेत्रों में ठीक 50% हाँ व 50% नहीं दर्ज किया गया है।
- कॉपीराइट उल्लंघन सामग्री के उपयोग के प्रति जागरूकताः ग्रामीण क्षेत्रों में 49.05% हाँ और 50.95% नहीं; शहरी क्षेत्रों में 47.92% हाँ और 52.08% नहीं दर्ज हुआ, जो दोनों जगह लगभग आधा–आधा विभाजन दिखाता है।
- पायरेटेड सॉफ्टवेयर और गेम के उपयोग के प्रति जागरूकताःग्रामीण स्तर पर 38.39% हाँ (61.61% नहीं) और शहरी स्तर पर 38.58% हाँ (61.42% नहीं) रहा है।
- साइबर मानहानि के प्रति जागरूकताःग्रामीण आंकड़े 41.47% हाँ (58.53% नहीं) और शहरी आंकड़े 41% हाँ (59% नहीं) दर्ज किए गए हैं।

- मॉर्फ्ड तस्वीरों के माध्यम से उत्पीड़न के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 44.79% हाँ (55.21% नहीं) तथा शहरी क्षेत्रों में 42.73% हाँ (57.27% नहीं) दर्ज हुई है।
- ऑनलाइन गतिविधियों में फर्जी पहचान के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 45.73% हाँ (54.27% नहीं) और शहरी क्षेत्रों में 43.94% हाँ (56.06% नहीं) पाई गई है।
- साइबर अरेस्ट (कानूनी गिरफ्तारी) की समझःग्रामीण क्षेत्रों में 47.63% हाँ (52.37% नहीं) और शहरी क्षेत्रों में 46.89% हाँ (53.11% नहीं) रही, जो दोनों जगह बढ़ती समझ को दर्शाती है।
- फोन से डेटा डिलीट करने की तकनीकी प्रक्रिया के प्रति जागरूकताःग्रामीण प्रतिक्रिया 47.16% हाँ (52. 84% नहीं) और शहरी प्रतिक्रिया 46.37% हाँ (53.63% नहीं) दर्ज की गई है।
- डिजिटल सुरक्षा हेतु हस्ताक्षरित बिल लेने के व्यवहार के प्रति जागरूकताःग्रामीण क्षेत्रों में 41% हाँ (59% नहीं) और शहरी क्षेत्रों में 39.1% हाँ (60.9% नहीं) दर्ज किया गया है।

परिकल्पना (H_0): महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में– साइबर अपराध के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3: परिकल्पना का ज–परिक्षण

विवरण	औसत	प्रसरण (Variance)	अवलोकन (N)	स्वतंत्रता कीकोटि (df)	टी-सांख्यिकी (t-Stat)	P-मान	टी-क्रांतिकद्वि-पुच्छीय
शहरी	42.8	4.69	20	19	-0.15	0.8827	2.09
ग्रामीण	42.65	2.85	20	—	—	—	—

विश्लेषण एवं व्याख्याः

चूंकि परिकलित t–मान का निरपेक्ष मूल्य (–0.15) 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध क्रांतिक मूल्य (2. 09) से काफी कम है तथा p–मान (.8827) 0.05 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना (H_0) स्वीकृत (Accept) की जाती है।

निष्कर्ष

इस शोध आलेख से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है की शहरी (578) और ग्रामीण (422) दोनों ही समूहों के अधिकांश विषयों में जागरूकता का स्तर 50% से कम है, अर्थात् अधिकांश उत्तरदाता विभिन्न साइबर अपराधों, डिजिटल सुरक्षा उपायों तथा ऑनलाइन कानूनी एवं नैतिक दायित्वों के प्रति पूर्णतः जागरूक नहीं हैं। परिकल्पना परीक्षण के परिणाम से ये निष्कर्ष निकलता है कि महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता के स्तर में सांख्यिकीय रूप से एक सार्थक अंतर नहीं है। शहरी छात्र–छात्राओं में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता का स्तर ग्रामीण छात्र–छात्राओं से अधिक है। यह स्थिति दर्शाती है कि छात्र–छात्राओं में विशेषकर ग्रामीण पृष्ठभूमि और शहरी परिवेश के युवा छात्र–छात्राओं में साइबर सुरक्षा, डिजिटल गोपनीयता, ऑनलाइन वित्तीय सुरक्षा, कॉपीराइट संरक्षण, साइबर नैतिकता तथा सुरक्षित इंटरनेट व्यवहार के संबंध में अभी भी पर्याप्त जानकारी का अभाव है।

अतः महाविद्यालय स्तर पर साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों, डिजिटल साक्षरता अभियानों, जागरूकता कार्यशालाओं तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं में साइबर अपराधों की पहचान, उनसे बचाव तथा सुरक्षित डिजिटल आचरण के प्रति जागरूकता को और अधिक सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, र., एवं वर्मा, एस. (2018). लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों में साइबर बुलिंग जागरूकता। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 7(3), 55–64.
2. जोशी, आर., एवं मेहता, वी. (2020). जयपुर जिले के कॉलेज छात्र–छात्राओं में साइबर कानून जागरूकता का मूल्यांकन। भारतीय विधि समीक्षा, 12(1), 88–97.
3. तिवारी, स., राय, सु. कु., एवं सिसोदिया, व. (2023). सोशल मीडिया पर भारतीय युवाओं के विरुद्ध साइबर अपराध का विश्लेषण। यूरोपियन इकनॉमिक लेटर्स, 13(4).
4. धरणी, एस. के., एवं लता, एस. (2025). साइबर अपराध का भयः चेन्नई के कॉलेज छात्रों पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ, पॉलिसी एंड सोशल रिव्यू, 7(2), 104–111.
5. पद्मावथी, आर. डी. (2019). विश्वविद्यालय स्नातकों की साइबर अपराध के प्रति जागरूकता और उसके शब्दों की परिचितताः एक तुलनात्मक अध्ययन। थिंक इंडिया (त्रैमासिक पत्रिका), 22(4), 6521।
6. बीजू, एम., जगदीश, के. के., एवं कौर, जे. (2022, मार्च). कर्नाटक, भारत में कॉलेज छात्रों के बीच साइबर सुरक्षा जागरूकता। री–इन्वेंटिंग बिज़नेस थ्रू डिजिटलाइज़ेशन एंड इनोवेशन (RBTDI), 38.
7. मल्होत्रा, ए., एवं सिंह, पी. (2019). दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों में ई–कॉमर्स साइबर अपराध जागरूकता। जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड डिजिटल सिक्योरिटी, 4(4), 102–113.
8. वजगथली, एम., नवनीत कुमार, एस., एवं बालाजी नारायण, बी. (2019). मैंगलोर के महाविद्यालयी छात्रों में साइबर अपराध जागरूकता. जर्नल ऑफ फॉरेंसिक साइंस एंड क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन, 12(1).
9. वजगथली, एम., नवनीत कुमार, एस., एवं बालाजी नारायण, बी. (2019). मैंगलोर के महाविद्यालयी छात्रों में साइबर अपराध जागरूकता. जर्नल ऑफ फॉरेंसिक साइंस एंड क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन, 12(1).
10. श्रीवास्तव, पी., एवं शर्मा, ए. (2021). सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साइबर अपराध जागरूकताः उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय का अध्ययन। जर्नल ऑफ मीडिया एंड साइबर स्टडीज, 3(1), 25–37.

❑❑❑